गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप, भारत

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप एक स्वैच्छिक संगठन है, जो स्थाई विकास और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर सन् 1975 से काम कर रहा है। संस्था लघु एवं सीमान्त किसानों, आजीविका से जुड़े सवालों, पर्यावरण संतुलन, लैंगिक समानता तथा सहभागी प्रयास के सिद्धान्तों पर सफलतापूर्वक कार्य कर रही है। संस्था ने अपने 35 साल के लम्बे सफर के दौरान अनेक मूल्यांकनों, अध्ययनों तथा महत्वपूर्ण शोधों को संचालित किया है। इसके अलावा अनेक संस्थाओं, महिला किसानों तथा सरकारी विभागों का आजीविका और स्थाई विकास से सम्बन्धित मुद्दों पर क्षमतावर्धन भी किया है। आज जी०ई०ए०जी० ने स्थाई कृषि, सहभागी प्रयास तथा जेन्डर जैसे विषयों पर पूरे उत्तर भारत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप ने 200 से अधिक स्वैच्छिक संस्थाओं का नेटवर्क बनाया है जो कि जिले, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करते हैं।

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप
पोस्ट बाक्स नं० 60, गोरखपुर- 273001
फोन : 0551-2230004, फैक्स : 0551-2230005
ईमेल : geag@geagindia.org, geagindia@gmail.com
वेबसाइट : www.geagindia.org

पैक्स
नई दिल्ली

घरेलू नुस्खे-बड़े काम के

पशुओं के उपचार हेतु घरेलू औषधियों के प्रयोग पर आधारित पुस्तिका

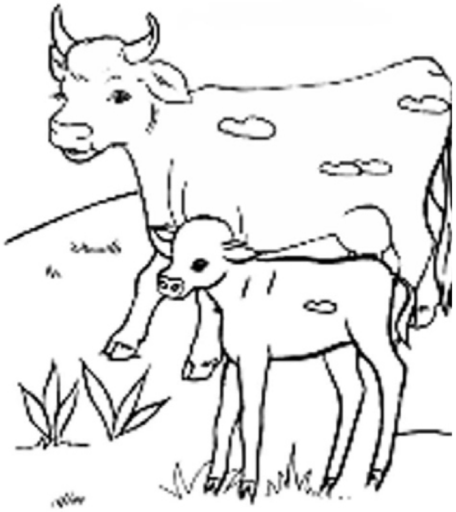

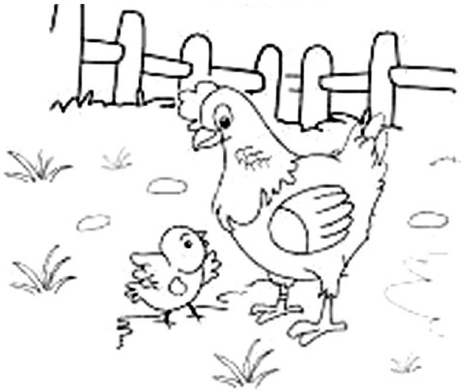

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप

घरेलू नुस्खे-बड़े काम के

पशुओं के उपचार हेतु घरेलू औषधियों के प्रयोग पर आधारित पुस्तिका

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप

नवम्बर, 2013

निर्देशन
विजय कुमार पाण्डेय

संकलनकर्ता
अंजू पाण्डेय

लेआउट व टाइपसेटिंग
राजकान्ती गुप्ता

प्रकाशन :
गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप
गोरखपुर -273001
फोन : (0551) 2230004, फैक्स : (0551) 2230005
ई-मेल : geagindia@gmail.com, geag@geagindia.org

विषय वस्तु

प्रस्तावना	1
आसानी से उपलब्ध घरेलू औषधियाँ	3

- हींग
- कत्था
- अलसी का तेल
- यूकेलिप्टस का तेल
- रेंडी का तेल
- सोंठ (सूखा अदरक)
- कुचिला (नक्स वोमिका)
- फिटकरी
- कपूर
- नीम
- चिरायता
- अर्जुन की छाल
- अंकुरित गेहूँ
- सतावरी
- काली मिर्च
- इमली
- खाने का सोडा
- कालाजीरा या सोमराज के सूखे बीज
- पपीता सार (कैरिका पपाया)
- भुनी हुई सुपारी
- लहसुन
- अनार
- महुआ
- पीपल की पत्ती
- भांग

घरेलू नुस्खे-बड़े काम के

- गांजा
- गुड़
- शीरा
- एल्कोहल
- जमाल गोटा
- फिनाइल
- सिरका
- आम का अचार
- साधारण नमक
- काला नमक
- अडूसा के पत्ते
- सरसों का तेल
- सौंफ
- खड़िया
- रोड़ा नमक
- शहतूत की पत्ती
- नींबू
- बबूल की छाल
- तूतिया

प्रस्तावना

उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। चावल, गेहूँ, ज्वार, बाजरा, जौ और गन्ना राज्य की मुख्य फसलें हैं। 1960 के दशक से गेहूँ व चावल की उच्च पैदावार वाले बीजों के प्रयोग, उर्वरकों की अधिक उपलब्धता और सिंचाई के अधिक इस्तेमाल से उत्तर प्रदेश खाद्यान्न का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य बन गया है। यद्यपि यहाँ छोटे–मझोले किसानों की संख्या अत्यधिक है। यहाँ के किसान दो प्रमुख समस्याओं से ग्रस्त हैं, पहला आर्थिक रूप से अलाभकारी छोटे खेत, दूसरा बेहतर उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में निवेश करने के लिए पर्याप्त संसाधन। राज्य की अधिकतम कृषि भूमि किसानों का मुश्किल से ही भरण–पोषण कर पाती है। पशुधन व डेयरी उद्योग किसानों के लिए आय के अतिरिक्त स्रोत हैं। उत्तर प्रदेश में भारत के किसी भी प्रदेश के मुकाबले सर्वाधिक पशु पाए जाते हैं।

उत्तर प्रदेश में छोटी जोत के किसानों की आजीविका के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में जाना जाने वाला पशुपालन वैसे तो एक लाभकारी व्यवसाय है, परन्तु यदि पशुओं के रोग एवं पशुपालकों की उनके बारे में अज्ञानता को देखा जाये तो यह बहुत ही घाटे का सौदा हो जाता है।

पशुपालन एक लाभदायक व्यवसाय है, पशुपालन को वैज्ञानिक विधि के आधार पर करने से पशु स्वास्थ्य पर नगण्य व्यय के साथ अधिक उत्पादन होने से लाभ का औसत बढ़ जाता है। पशुपालकों को पशुओं में होने वाली सामान्य बीमारियों की जानकारी स्वंय होनी चाहिये, जिसके आधार पर वे अपने पशु को प्राथमिक देशी चिकित्सा प्रदान कर सकें साथ ही कुछ देशी दवाइयां जिनकी गुणवता वैज्ञानिक समुदाय में जाँची व परखी जा चुकी है, उनकी भी पहचान पशुपालक को होनी चाहिये। यहां पर पशुओं की साधारण बीमारियां एवं उनके देशी उपचार पर प्रकाश डाला गया है।

रोगों से पशुधन की क्षति का प्रधान कारण परजीवियों का संचार है, जिससे उनमें उर्वरा शक्ति का ह्रास, दूध एव मांस के उत्पादन में कमी तथा प्राप्त उत्पादों जैसे– दूध, मांस, ऊन आदि की गुणवत्ता में कमी आती है। पशुरोगों में सबसे भयंकर पशुप्लेग, गलाघोंटू, गिल्टी रोग तथा जहरबाद हैं। खुर एवं मुँह पका रोग यूरोपीय पशुओं के लिए भंयकर रोग हैं, पर भारत में नमक द्वारा उपचार से इस रोग से ग्रसित पशु प्रायः रोगमुक्त हो जाते हैं। जुताई के समय इस रोग के फैलने से काम ठप्प हो जाते हैं। यक्ष्मा या क्षय रोग, स्तनकोप या थनेजा, नाभि रोग, कुछ ऐसे जीवाणु रोग हैं, जो पशुपालकों एवं

घरेलू नुस्खे-बड़े काम के

पशुचिकित्सकों के लिए चिंता के कारण बन जाते हैं।

उपचार न होने पर सर्रा रोग से ग्रसित पशु मर जाते हैं। दमघोटू सामान्यतः नए कुक्कुटों की बीमारी है। यह रोग साधारणतः अच्छा हो जाता है लेकिन कभी–कभी इस रोग से मुक्त हो जाने पर भी कुक्कुट निकम्मा हो जाता है।

गोटी, हैजा एवं कौक्सिडिओसिस के कारण कुक्कुट पालन उद्योग को गहरी क्षति पहुँचती है। शूकर ज्वर या विशूचिका (swine fever) तथा एरिसिपेलैस (erysipelas) सूअरों के प्रमुख रोग हैं। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के रोगों की वजह से पशुधन को हानि पहुँचती रहती है।

सामान्यतया दो–तीन दिन के घरेलू उपचार से यदि फायदा न दिखे तो पशु चिकित्सक के पास ले जाकर पशु का इलाज करवाना चाहिए। बीमारी की तीव्रता के अनुसार ही उपचार होना चाहिए। गंभीर बीमारियों में घरेलू उपचार न करके तत्काल डाक्टर से परामर्श लेना चाहिए।

आसानी से उपलब्ध घरेलू औषधियाँ

हींग

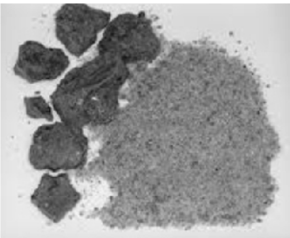

यह हल्के पीले रंग अथवा सफेद रंग की होती है। इसका गंध भारी तथा स्वाद कड़वा होती है। यह पानी में घुलनशील है और इसका घोल दूधिया रंग का होता है। इसका प्रयोग ऊपरी भागों, त्वचा के ऊपरी घावों को तेजी से सुखाने के लिए किया जाता है तथा भीतरी प्रयोग अर्थात् दवा के रूप में खाने से पेट से गंदी वायु को निकालने सड़न, पीप को रोकने, जीवाणुओं का नाश करने तथा बलगम को निकालने वाली औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है।

उपयोग

टिंचर के रूप में : हींग का 20 प्रतिशत का टिंचर (20 ग्राम हींग को 1 लीटर जल में) घावों के लिए प्रयोग किया जाता है। पशुओं में अफरा के उपचार एवं उदर शूल या पेट दर्द में नीचे लिखा मिश्रण दवा के रूप में दिया जाता है। हींग, सोंठ, तम्बाकू, काला नमक प्रत्येक को बराबर–बराबर भाग में लेकर 1 लीटर जल में घोल बना दिया जाता है।

पशुओं के पेट में कीड़े पड़ जाने पर 250 ग्राम ताजा हल्दी के गांठ को कूटकर इसका रस निचोड़ लें। इस रस को पीने के पानी मे मिलाकर प्रयोग किया जाता है। यह दवा हर महीने में एक बार निश्चित रूप से दी जानी चाहिए।

अफरा होने अथवा पशुओं का पेट फूल जाने और पशुओं को सांस लेने एवं बैठने में परेशानी आने की स्थिति में पशुओं को 20 ग्राम सुभाश/हींग को 300 ग्राम मीठे तेल में मिलाकर तुरन्त पिला दें इससे गैस फौरन खत्म हो जायेगी। यदि सहजन के पेड़ की छाल को पानी में उबालकर उस पानी को पिलाये तो भी अफरा खत्म हो जाता है।

कत्था

यह हल्के भूरे अथवा लाल रंग के ढेलो के रूप में बाजार में मिलता है। यह अन्दर से रन्ध्रयुक्त और तोड़ने में भुरभुरा होता है। खाने में पहले–पहल कड़वा व तीखा तथा बाद में मीठा लगता है। उबलते हुए पानी में यह पूर्ण रूप से

घुलनशील है। दवा के रूप में घोड़ों को 3.55 – 7.10 ग्राम तथा गाय व बैल को 7.10– 21.30 ग्राम की मात्रा में दिया जा सकता है।

उपयोग

कत्थे का प्रयोग अतिसार और पेचिश में किया जाता है। कत्थे का मिश्रण अफीम 3.55 ग्राम, कत्था 7.10 ग्राम, अदरक 3.55 ग्राम तथा खड़िया 14.20 ग्राम को मिलाकर बनाया जाता है। इस मिश्रण को पशु अनुसार खुराक सुबह–शाम खिलाना चाहिए।

अलसी का तेल

अलसी का तेल अलसी को पेरने से प्राप्त होता है। हवा में रखे जाने पर यह गाढ़ा हो जाता है। अलसी का तेल घोड़े को 560 से 800 ग्राम तथा गाय व बैल को 568 से 1136 ग्राम तक खिलाया जाता है। साथ ही इसे पेट दर्द में क्लोरल हाइड्रेड के साथ मिलाकर भी प्रयोग किया जाता है।

यूकेलिप्टस का तेल

यूकेलिप्टस की ताजी पत्तियों से यूकेलिप्टस का तेल आसवन द्वारा प्राप्त किया जाता है। यह या तो रंगहीन होता है अथवा हल्का पीला। स्वाद में कड़वा और गन्धयुक्त पदार्थ है, जो पांच गुने प्रतिशत ऐल्कोहल मे घुलनशील है।

- यूकेलिप्टस के तेल को घावों की ड्रेसिंग के लिए प्रयोग किया जाता है।
- गठिया के दर्द इत्यादि में यूकेलिप्टस के तेल का प्रयोग मालिश के लिए किया जाता है।

रेंडी का तेल

अरण्डी का तेल साफ, हल्के रंग का होता है, जो अच्छे से सूख कर कठोर हो जाता है। इस तेल में कोई गन्ध नहीं होती है। इसके औषधीय प्रयोग भी होते हैं। इस तेल को दवा में एक मूल्यवान जुलाब माना जाता है। रेंडी का तेल अरण्डी के बीजों से प्राप्त किया जाता है। रेड़ी के तेल का प्रयोग जुलाब के रूप में किया जाता है।

घोड़े को 560 से 1130 ग्राम दिया जाता है। गाय व बैल को भी इतनी ही मात्रा में दिया जाता है लेकिन बछड़े के लिए मात्रा घटाकर 50 से 60 ग्राम कर दिया जाता है।

शुद्ध अरण्डी के तेल की कुछ बूंदे पशुओं की आंख में डाल देने पर पशुओं की आंख में किसी चीज के गिर जाने पर लाभ पंहुचता है।

सोंठ (सूखा अदरक)

सूखे अदरक को सोंठ कहते हैं। यह अदरक के पौधे का भूमिगत तना है। प्रायः सोंठ का प्रयोग पाउडर रूप में होता है। घोड़े को 14 से 28 ग्राम दिया जाता है। गाय व बैल को भी इतनी ही मात्रा में दिया जाता है।

उपयोग

500 ग्राम सोंठ को 1 लीटर एल्कोहल में मिला देने पर सोंठ का घोल (टिंचर) तैयार हो जाता है। सोंठ आमाशय, जिगर और पाचन शक्ति को बल देता है। यह भूख को बढ़ाता है, पेट की वायु को बाहर निकालता और उत्तेजना उत्पन्न करता है। दस्त कराने वाली दवाओं के साथ भी सोंठ का प्रयोग किया जाता है।

कुचिला (नक्स वोमिका)

ये कुचिला नामक एक छोटे से पेड़ के पके हुए बीज होते हैं। ये तवे के आकार के चपटे होते हैं और इनमें ऊपर रोयें होते हैं। ये गन्धहीन बीज स्वाद में बड़े कड़वे होते हैं। इनको पीसकर पाउडर के रूप में प्रयोग किया जाता है।

उपयोग

कुचिला का प्रयोग उस दशा में जबकि पशुओं को लकवा मार जाने का भय होता है, बहुत उपयोगी सिद्ध होता है, क्योंकि इसका रीढ़ की नाल पर उत्तेजक प्रभाव पड़ता है। पेट दर्द में इस औषधि का प्रयोग अमोनियम कार्बोनेट के साथ किया जाता है। निमोनिया तथा अन्य श्वास रोगों में इसका प्रायः प्रयोग किया जाता है।

फिटकरी

यह रंगहीन पदार्थ है जिसका स्वाद मीठा और कसैला होता है। यह सात भाग पानी में घुलनशील है। यह द्रवों को जमाने और तन्तुओं को संकुचित करने के साथ खून का दृढ़ थक्का बनाती है। अतः खून का बहना रोकने के लिए यह अति उपयोगी औषधि है। यह श्लेष्मिक झिल्ली को सिकोड़ती है। अतः आंख धोने, गर्भाशय जलन, सर्दी और मुख्य बुखार में फिटकरी का 2–5 प्रतिशत घोल प्रयोग किया जाता है। भीतरी रक्त प्रदाह को रोकने के लिए फिटकरी खिलाई भी जाती है।

जिस जगह खून बह रहा है, उस जगह पर पिसी हुई फिटकरी लगाने से तुरन्त खून बन्द हो जाता है अथवा नाग केसर जड़ी का लेप करने से भी खून शीघ्र बन्द हो जायेगा। मुँह में छाले होने पर 10 ग्राम सुहागा को हल्का सा गर्म करके फूला लें तथा उसमें 2 ग्राम कपूर और 20 ग्राम शहद मिला लें, मुँह को फिटकरी के पानी से धोकर इस दवाई का मुँह में लेप कर दें छाले अति शीघ्र ठीक हो जायेंगे।

कपूर

सदाबहार पेड़ की लकड़ी से आसवन विधि द्वारा प्राकृतिक कपूर प्राप्त किया जाता है लेकिन संश्लेषण विधि द्वारा भी कपूर बनाया जाता है। कपूर एक रंगहीन पदार्थ है जिसके रवे पारदर्शी होते हैं। इनमें एक विशेष प्रकार की सुगन्ध आती है। स्वाद में यह पहले कड़वा फिर तिक्त और अन्त में ठण्डा लगता है। यह तेजी से जलता है और हवा में खुला रख देने पर शीघ्र ही उड़ जाता है। अतः इसे डिब्बे में लौंग के साथ बन्द करके रखते हैं। 10 ग्राम देशी कपूर को 200 ग्राम नारियल के तेल में मिलाकर उसको किसी बन्द ढक्कन के बरतन में रख लें तथा पशु के खुजली वाले स्थान पर दिन में दो बार लगावें। इससे अतिशीघ्र आराम मिलता है। अगर जानवरों के पूरे शरीर पर खुजली हो तो इसको पानी मिलाकर पूरे शरीर पर लगा देना चाहिए।

1. कपूर को ईथर अथवा जैतून के तेल में (1 : 4) मिलाकर दिया जाता है।
2. छाले व घावों पर लगाने के लिए कपूर का निम्नलिखित जीवाणुनाशक एवं छिड़कने वाले पाउडर के साथ मिलाकर प्रयोग किया जाता है। कपूर 3.55 ग्राम, कार्बोलिक एसिड 3.55 ग्राम, फिटकरी 7.10 ग्राम, जिंक आक्साइड 7.10 ग्राम व बोरिक एसिड 226 ग्राम इन सबको मिलाकर पाउडर के रूप में प्रयोग किया जाता है।
3. कपूर को तुलसी दल के साथ पीस कर ऐसे घावों पर लगाना चाहिए जिनमें कीड़े पड़ गये हों। ऊपर से पट्टी बांधनी चाहिए।
4. छाजन और दाद, खाज, खुजली में कपूर 3.55 ग्राम, माड़ 14.20 ग्राम, जिंक आक्साइड 14.20 ग्राम सभी को मिलाकर पाउडर बनाकर इसका प्रयोग करना चाहिए।
5. 200 भाग कपूर को 800 भाग मूंगफली के तेल में मिलाकर कपूर का लेप तैयार किया जाता है जिसे मोच, चोट, गठिया, पशुओं के स्तन प्रदाह में लेप के रूप में प्रयोग किया जाता है। वायु नली भुज प्रदाह और निमोनिया में इस लेप की छाती पर मालिश की जाती है।
6. घोड़ों के उदर दर्द और गाय–बैल में अफरा रोग होने पर नीचे लिखी औषधि की 27 ग्राम मात्रा देनी चाहिए। कपूर, अजवाइन, हींग, कालीमिर्च और सनई की पत्ती सभी को बराबर–बराबर मात्रा (4 ग्राम) में लेकर पीस लें व 1 पाव पानी में मिलाकर उसे रोगी पशु को पिलायें।

नीम

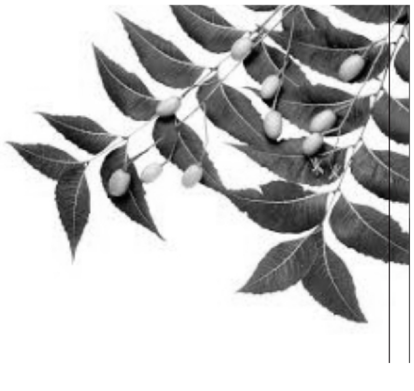

एक तेजी से बढ़ने वाला सदाबहार पेड़ है, जो 15–20 मी0 (लगभग 50–65 फुट) की ऊंचाई तक पहुंच सकता है, और कभी–कभी 35–40 मी0 (115–131 फुट) तक भी ऊंचा हो सकता है। यद्यपि नीम एक सदाबहार पेड़ है, लेकिन सूखे में इसकी अधिकतर या लगभग सभी पत्तियां झड़ जाती हैं। इसकी शाखाओं का प्रसार व्यापक होता है।

मन्दाग्नि, वायुरोग व पशु हाजमा में नीम

- नीम की पकी निबोली अथवा नीम का फूल कुछ दिन नित्य खाने से मंदाग्नि में काफी लाभ होता है।
- नीम तेल 30 बूंद पानी के साथ खाने से वायु विकार तथा पेट का मरोड़ दूर होता है।

- पशु हाजमा में नीम की पत्तियाँ गुड़ तथा नमक के साथ कूटकर खिलाने से लाभ होता है। इससे आंत के कीड़े भी मरते हैं।
- बाहरी परजीवी होने पर नीम की ताजा पत्तियों को 15–20 मिनट के लिए उबाल कर पानी में रात भर रखें। सुबह पानी से पत्तियां निकाल लें। पानी के इस घोल से पशु व पक्षियों को नहलाया जाता है और पत्तियों को पीस कर इसका लेप शरीर के प्रभावित भागों पर लगाया भी जाता है।
- यदि खुजली के साथ हल्के घाव भी हो जावें तो उन पर नीम की नई व कोमल पत्तियों को पीस कर लगाना चाहिए।

चिरायता

चिरायता ऊँचाई पर पाया जाने वाला पौधा है। इसकी पत्तियाँ और छाल बहुत कड़वी तथा ज्वर–नाशक व रक्तशोधक मानी जाती है। नेपाल इसका मूल उत्पादक देश है। कहीं–कहीं मध्य भारत के पहाड़ी इलाकों व दक्षिण भारत के पहाड़ों पर उगाने के प्रयास किए गए हैं । किरात व चिरेट्टा इसके अन्य नाम है। कालमेघ को हरा चिरायता नाम भी दिया गया है। चिरायता नामक पौधा जब फूल देता है, तो उसे काटकर इकट्ठा कर लिया जाता है और सुखाकर रख लिया जाता है। चिरायता निम्नलिखित रूपों में प्रयोग होता है–

पाउडर के रूप में : घोड़ा और गाय बैल के लिए 14–28 ग्राम निम्नलिखित रोगों में दिया जाता है। इसे सन्निपात ज्वर, व्रण, रक्त, दोषों में औषधि के रूप में पशुओं को दिया जाता है। इस प्रकार यह एक प्रकार की प्रतिसंक्रामक औषधि है, जो ज्वर उत्पन्न करने वाले मूल कारणों का निवारण करती है। इसी प्रकार यह तीखेपन के कारण कफ पित्त शामक तथा वातशामक है। पशुओं को ज्वर व खांसने पर दिया जाता है।

टिंचर के रूप में : चिरायता 100 भाग, संतरा का सूखा छिलका 36.5 भाग, इलाइची 12.5 भाग, 35 प्रतिशत ऐल्कोहल 1000 भाग मिलाकर प्रयोग किया जाता है। कोढ़ तथा घावों को मिटाता है।

अर्जुन की छाल

घाव अथवा टूटे सीग के इलाज के लिए झरबेरी (बेर) के पेड़ की जड़ों को खूब अच्छी तरह धोकर सूखाने के पश्चात् अच्छी तरह से बारीक पीस लें तथा इसी प्रकार अर्जुन छाल का पाउडर तैयार कर दोनों को बराबर मात्रा में मिलाकर रखें। जब कभी किसी पशु का सींग टूट जाये या कोई घाव हो जाये तो उस पर इस पाउडर को लगाकर पट्टी बांधने से घाव अतिशीघ्र भर जाता है।

अंकुरित गेहूँ

पशुओं के गरम न होने पर उनको अंकुरित गेहूं खिलाया जाता है। यदि कोई पशु एक बार बच्चा देकर फिर समय पर ताव में अथवा जाग में नहीं आता है, तो उन पशुओं को अंकुरित गेहूँ की 1 किलो की मात्रा रोज दस दिन तक खिलानी चाहिए तथा साथ में संतुलित पशु आहार भी खिलाना चाहिए।

सतावरी

यदि पशु का दूध अचानक कम हो जाये तो निम्न दवाईयां एक माह तक सुबह शाम देने से दूध में निश्चित रुप से बढ़ोत्तरी होगी। सतावरी 100 ग्राम, चन्द्रशूल 100 ग्राम तथा बिलारीकन्द 100 ग्राम इन तीनों को बराबर मात्रा में लेकर सुबह–शाम 150–150 ग्राम खिलावें।

काली मिर्च

यदि कोई पशु हल्की जहरीली चीज खा जाता है तो उसको तुरन्त 200 ग्राम देशी घी व 100 ग्राम काली मिर्च को मिलाकर पिला देना चाहिये।

इमली

इमली को पानी में उबालकर उस पानी को पिलाने से भी जहर का असर धीरे–धीरे खत्म हो जाता है। यह सुबह–शाम तीन दिन तक करें।

खाने का सोडा

यदि कोई पशु किसी प्रकार की खाद खा जाता है तो उसे 200 से 250 ग्राम खाने का सोडा पानी में घोलकर पिलाना चाहिए, ऐसा करने पर खाद का असर कम हो जायेगा। यह घोल 3 दिन तक सुबह–शाम देने से असर एक दम समाप्त हो जाता है।

कालाजीरा या सोमराज के सूखे बीज

इसका इस्तेमाल पेट के कीड़े (गोल कृमि) को मारने के लिए किया जाता है।

इन पौधों को पूरे भारत मे गांवों के आस पास जंगली झाड़ियों के रूप में उगता पाया जा सकता है।

यदि पशु के थनों में सूजन आ जाये या दूध में खून आये तो सबसे पहले बर्फ की मालिश करनी चाहिये तथा फिर उस पर कालाजीरा का लेप कर देना चाहिये। तत्पश्चात् पशु को एक पाव नींबू का रस तथा एक पाव तिल्ली का तेल मिलाकर सुबह–शाम 2–3 दिन पिलाने से अति शीघ्र आराम मिलता है।

पपीता सार (कैरिका पपाया)

पपीते के कच्चे फल या पौधे की शाख में चाकू से छेद करके पौधे का रस इकठ्ठा किया जाता है। सुबह के समय इस रस को अच्छी मात्रा में प्राप्त किया जा सकता है। पौधों का रस 5 भाग में एक भाग लगभग 10–15 मिली0 पानी मिलाकर 5 दिनों तक देने से आंत के कीड़ों को नष्ट किया जा सकता है। यह मात्रा 10 मुर्गी अथवा बत्तख के लिए पर्याप्त है। इस मिश्रण में सक्रिय विशिष्ट तत्व पेप्सिन जैसा एंजाइम 'पपायन' है, जो आंत्र परजीवी पर मुख्य रूप से प्रभावी होता है।

भुनी हुई सुपारी

इसका इस्तेमाल पशुओं के शरीर पर लगने वाले कीड़ों जैसे किलनी, पिस्सू आदि को मारने के लिए किया जाता है। इसको पीसकर, मुर्गियों को फीड मे मिलाकर खिलाना चाहिये। एक सप्ताह तक दिन में एक बार, इस चूर्ण की एक चुटकी मुर्गी अथवा बत्तख के मुंह में भी डाली जा सकती है।

लहसुन

मुर्गियों में परजीवी कीड़ों के समाधान हेतु इसका 6 जवा पीस कर मुर्गियों को फीड मे मिलाकर खिलाएं। यह मात्रा 1–2 दिनों के लिए 10 मुर्गियों के लिए पर्याप्त है। इस प्रक्रिया को महीने में एक बार दोहराएँ।

अनार

एक भाग अनार फल को दो भाग पानी में 15–20 मिनट के लिए उबालकर, पानी को छान लें। इस छने हुए रस को 2–3 दिनों तक पीने के पानी के रूप में परजीवी कीड़ों को मारने हेतु दिया जा सकता है।

महुआ

महुआ के तेल को भी मुर्गी अथवा बत्तख की त्वचा पर लगाने से जुँओं से राहत मिलती है। आदिवासी क्षेत्रों में विशेष रूप से इसे इस्तेमाल किया जाता है।

पीपल की पत्ती

पशुओं में पीलिया रोग होने पर पीपल के पेड़ के 50 ग्राम नये नये पत्तों को सावधानी से धोकर उसे खूंब बारीक पीस लें तथा उसमें 100 ग्राम मिश्री डालकर उसे फिर पीस लें और आधा किलो पानी में घोलकर साफ कपड़े से छान लें तथा यह पानी दिन में दो तीन बार पिलाने से शीघ्र आराम आ जाता है एवं इसके साथ–साथ गाय की छाछ में फिटकरी को मिलाकर देने से और जल्दी आराम आ जाता है।

भांग

यह उत्तेजनशीलता को कम करती है। नींद अधिक लाती है और कमजोरी को दूर करती है। बड़े जानवरों को इसकी मात्रा 25–30 ग्राम तक देते हैं।

गांजा

यह उत्तेजनशीलता को कम करती है। इसके प्रयोग से खून का दौरा बढ़ जाता है और स्फूर्ति अनुभव होने लगती है।

गुड़

ज्वार की फसल कटने के बाद जो हरी पत्तियाँ निकलती हैं वे जहरीली होती है ऐसे खेत में पशुओं को नहीं चरने देना चाहिए। यदि पशु जहरीली ज्वार खा जाये तो उसको गुड़ या पानी फौरन पिला देना चाहिये तथा फिर छाछ में नमक 50 ग्राम मिलाकर पिलाना चाहिये, ऐसा करने पर पशु बच सकता है। यह 3–4 दिन देना

चाहिये। गुड़ के प्रयोग से पशुओं की शक्ति बढ़ती है तथा स्वास्थ्य अच्छा होता है। गुड़ का प्रयोग अधिकतर औषधियां खिलाने के लिए किया जाता है। पशु को निमोनिया/खासी/सर्दी जुकाम होने पर सबसे पहले पशु के ऊपर कपड़ा बांध दें। फिर 250 ग्राम अडूसा के पत्ते, 100 ग्राम सौंठ, 20 ग्राम काली मिर्च, 50 ग्राम अजवायन इन सबकों बारीक पीसकर 20 ग्राम पिसी हल्दी व आधा किलो गुड़ के साथ अच्छी तरह मिलायें तथा इसके 6 लड्डू बना लें तथा दिन में तीन बार पशुओं को चटाने से अतिशीघ्र आराम आता है। अथवा 100 ग्राम सुहागा का फूल, 200 ग्राम पिसी मुलेहटी को 500 ग्राम गुड़ के साथ मिलाकर उसके 6 लड्डू बना लें और दिन में तीन बार एक–एक लड्डू देने से भी आराम आता है। यह उपचार 4–5 दिन करें।

शीरा

यह शक्तिवर्द्धक है। इसके प्रयोग से स्वास्थ्य अच्छा हो जाता है। यह औषधियां खिलाने के लिए मिलाने के काम आता है। कड़वी औषधियों में शीरा मिलाकर इसे पशुओं को खिलाया जाता है।

एल्कोहल

यह शक्तिवर्द्धक है। इसको कमजोरी की अवस्था में अथवा पाचन क्रिया मन्द होने पर थोड़ी मात्रा में देते हैं। इससे कमजोरी भी दूर हो जाती है।

जमाल गोटा

यह साधारण कुपच को दूर करने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसके तेल को भी इसी कार्य के लिए प्रयोग करते हैं। इसे आधा चुटकी तक देते है।

फिनाइल

यह बीमारी के कीटाणुओं को नष्ट करने तथा उनकी वृद्धि को रोकने के लिए प्रयोग किया जाता है। जब खुरपका की बीमारी हो जाती है, तो एक लीटर पानी में 200 मिली0 फिनायल डालकर घोल बना लें एवं उस घोल को खुर धोने के लिए प्रयोग करना चाहिए। मुंहपका बीमारी में एक लीटर पानी में 10 मिली0 फिनायल डालकर घोल बना लें एवं उस घोल को मुंह धोने के लिए काम में लेते हैं।

सिरका

जब अफरा आ जाता है, तो हवा का खारिज होना बन्द हो जाता है। उसी समय दो बड़ा चम्मच सिरका जानवर को दिया जाता है जिससे अफरा या पेट फूलने से राहत मिलती है। थोड़ी मात्रा में देने पर शक्तिवर्द्धक का कार्य करता है।

आम का अचार

जब जानवर का पेट फूल जाता है और गोबर तथा हवा का खारिज होना बन्द हो जाता है तब इसके प्रयोग से दस्त आता है और गन्दी गैस बाहर निकल जाती है।

साधारण नमक

यह कीटाणुओं को नष्ट करने के काम आता है। बड़े जानवरों में 30–120 ग्राम उत्तेजनशीलता के लिए दिया जाता है। 0.9 प्रतिशत का घोल खून की कमी होने पर दिया जाता है। यदि पशु मिट्टी खाने/दीवार चाटने/पेशाब पीने जैसे कार्य करते है तो उनको नियमित रूप से प्रतिदिन 50 ग्राम नमक व 25 ग्राम खनिज लवण पाउडर देना चाहिय। इससे उनकी उपरोक्त आदतें खत्म हो जायेगी।

काला नमक

जब पेट फूल जाता है या अफरा आ जाता है तो पाचन क्रिया मन्द हो जाती है ऐसी स्थिति में 50 ग्राम अजवायन व 50 ग्राम काला नमक को 500 ग्राम छाछ में मिलाकर देने से शीघ्र आराम होता है। यह उपचार दिन में दो बार करें।

अडूसा के पत्ते

पशुओं को बुखार आने पर अडूसा के 100 ग्राम पत्ते, नीम गिलोय 100 ग्राम, कुटकी 10 ग्राम तथा काली मिर्च 50 ग्राम इन सबको मिलाकर अच्छी तरह बारीक पीस लें तथा इसमें से 25 ग्राम सुबह व 25 ग्राम शाम को 1 किलो पानी में उबाल कर इस पानी को पिलाने से बुखार उतर जाता है। यह उपचार 1–2 दिन करें।

सरसों का तेल

साधारण कुपच होने पर बच्चों को 50 ग्राम तथा बड़े जानवरों को 250– 300 ग्राम दिया जाता है। कमजोर पशुओं में खून का दौरा कम होने पर इससे मालिश की जाती है। इसका प्रयोग बहुत कम है।

पशुओं को किलनी/जुएँ पड़ने पर खाने वाली तम्बाकू की एक पुड़िया को आधा किलो पानी में कुछ देर के लिये भिगों दे, फिर उसको उस पानी में अच्छी तरह मसल लें तथा उसमें दो चम्मच सरसों का तेल मिलाकर पशु के शरीर पर मालिश करें यदि पानी कम रहे तो उसमें और डाल लें। इसके लगाने के कुछ देर बाद पशु के शरीर को बोरी से रगड़ कर साफ कर दें, सब किलनी व जुएँ खत्म हो जायेंगी।

सौंफ

सौंफ में कई औषधीय गुण मौजूद होते हैं, जिनका सेवन करने से स्वास्थ्य को फायदा होता है। सौंफ हर उम्र के पशुओं के लिए फायदेमंद होती है। सौंफ में कैल्शियम, सोडियम, आयरन, पोटैशियम जैसे तत्व पाये जाते हैं। सौंफ का फल बीज के रूप में होता है और इसके बीज को प्रयोग किया जाता है। पेट की समस्याओं के लिए सौंफ बहुत फायदेमंद होता है।

पेट के दर्द में 50–100 ग्राम सौंफ बड़े जानवरों को देने से पेट दर्द बन्द हो जाता है। क्योंकि बफरिंग की क्रिया बहुत अधिक होती है और गन्दी गैसे अधिक मात्रा में बाहर आती है।

खड़िया

खड़िया एक सफेद पदार्थ है जो कैल्शियम का प्रमुख स्रोत है। पशुओं में कैल्शियम पूर्ति हेतु खड़िया दी जाती है। दस्त होने पर 100 ग्राम चावल उबाल लें तथा उसमें 200 ग्राम छाछ व 100 ग्राम खड़िया पीसकर मिला लें। बड़े पशुओं को इसकी 1 खुराक सुबह शाम दो बार तथा छोटे पशुओं को इसकी आधी खुराक दें। यह दो से तीन दिन तक खिलानी चाहिए। खूनी दस्त में बेलगिरी 100 ग्राम व मिश्री 200 ग्राम में 100 ग्राम सूखा धनियां मिला लें, इन तीनों को खूब अच्छी तरह पीस लें तथा इसके बाद इसकी तीन खुराक बनाकर 250 ग्राम पानी में घोल कर दिन में तीन बार दें। यह औषधि दो से तीन दिन खिलाने पर पूर्णतया आराम मिलता है।

रोड़ा नमक

पशुओं के जीभ पर बड़े–बड़े छाले होने पर रोड़ा नमक नाद में रखकर खिलाया जाता है। तीन दिन तक 50 ग्राम पीसा नमक प्रतिदिन जानवर की जीभ बाहर निकालकर उस पर रखकर कटे हुए प्याज से रगड़ना चाहिए।

शहतूत की पत्ती

पशओं में कभी–कभी कान के बहने की समस्या आ जाती है। कान से मवाद निकलता है और कान में सूजन भी हो जाती है। इसमें 10 मुट्ठी शहतूत की पत्ती को पीसकर उसका रस निकाल लेना चाहिए और नियमित रूप से 5 दिन तक डालें।

नींबू

पशुओं में किलनी व जूँ की समस्या होने पर जांघ के बीच में किलनी व जूँ चिपकी रहती हैं। जहाँ–जहाँ जूँ चिपकी रहती हैं वहाँ खुजलाता है। नींबू का रस निकालकर उसे हल्दी पाउडर मिलाकर लगातार 2 दिन तक लगाना चाहिए।

दुधारू पशुओं जैसे गाय व भैंस में असमय बच्चा बाहर आ जाता है या मर जाता है तो दो नींबू को काटकर रस निकालकर उसे 5 लीटर शुद्ध पानी में मिलाकर दक्ष पशु चिकित्सक से गर्भाशय की धुलाई करवायें। इसके साथ ही पशु को संतुलित आहार और हरा चारा नियमित रूप से खिलाना चाहिए।

बबूल की छाल

गाय, बैल और भैंस में खुरपका की बीमारी में खुर और मुँह पक जाता है। ऐसे में पशु आहार लेना बन्द कर देता है और लंगड़ाने लगता है। जनवरी व बरसात में बीमारी की अधिक संभावना रहती है। इसमें जीभ पर छाले भी पड़ जाते हैं और कभी–कभी खुर में कीड़े तक पड़ जाते हैं। इस बीमारी से दुधारू पशुओं में दूध की कमी हो जाती है। नवम्बर–दिसम्बर में टीकाकरण करवाना चाहिए ताकि संक्रमण से बचाव हो सके। 500 ग्राम बबूल की छाल को पानी में उबालकर ठण्डा होने पर खुर व मुँह पर लगायें।

तूतिया

पशुओं में पूँछ सड़न की बीमारी होने पर पूँछ सड़कर गिर जाती है। 50 ग्राम तूतिया को 50 मिली0 सरसों तेल में मिलाकर पेस्ट बना लेना चाहिए। इसको सड़े हुए पूँछ पर लगाना चाहिए। इससे आराम मिलता है। अधिक प्रकोप होने पर सड़ा हुआ भाग काटकर निकाल देना चाहिए।